श्री रुद्राष्टक स्तोत्रम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं, विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं, चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ।।1।।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं, गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं, गुणागार संसार पारं नतोऽहम् ।।2।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गम्भीरं, मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरम् ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा, लसद्भालबालेन्दु कण्ठे भुजंगा ।।3।।
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं, प्रसन्नाननम् नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालम्, प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ।।4।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं, अखण्डमजं भानुकोटिप्रकाशम् ।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं, भजेऽहं भवानीं पतिं भावगम्यम् ।।5।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी, सदा सज्जनानन्द दाता पुरारि ।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारि, प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारि ।।6।।
न यावद्उमानाथ पादारविन्दं, भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं, प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम् ।।7।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं, प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो ।।8।।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हर तोषये ।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भु प्रसीदति ।।

।। इति श्रीगोस्वामी तुलसीदासकृतं श्री रुद्राष्टकं सम्पूर्णम् ।।

रुद्राष्टकम् स्तोत्र पाठ से लाभ

जो इस रुद्राष्टक का सर्वदा भक्तिसहित पाठ करता हैं उनपर महादेव जी की कृपा सदैव बनी रहती है।